10

मेरे बहनोई बाबूलालजी तथा बहन गिल्लीबाई

मैं पहले बता चुका हूँ कि मुझसे 7-8 वर्ष बड़ी एक बहन गिल्लीबाई थी। उसका विवाह रानीगंज (बंगाल) के एक संपन्न परिवार में हुआ था। यह वही बहन थी जिसने मेरी माँ को मेरे विषय में की गयी ज्योतिषी की भविष्यवाणी बतायी थी जिसके कारण मेरा नाम मेरी माँ ने **गुलाब** रख दिया था। उसके पति का नाम बाबूलाल था। उनकी बंगाल के दुबराजपुर नामक शहर में एक धान की मिल थी और गल्ले के थोक व्यापार का काम रानीगंज शहर में था, जिसे मेरे बहनोई बाबूलालजी अपने पिता की मृत्यु के बाद सँभालते थे। रानीगंज शहर में अपने निजी भवन के अतिरिक्त और भी उनके कई मकान थे जिनका किराया मिलता था। मिल का कार्यभार एक गुजराती मैंनेजर के जिम्मे था जो बहुत ही ईमानदार और व्यवसाय-कुशल था तथा परिवार के ही एक सदस्य के समान था। चूँकि बाबूलालजी दत्तक पुत्र थे इस लिए बाबूलालजी के पिता ने मृत्यु के पूर्व, विशाल रिहायशी मकान को तथा उसके बगल के एक बड़े मकान को छोड़कर मिल तथा अन्य सारी संपत्ति अपनी पत्नी अर्थात् बाबूलालजी की माँ के नाम कर दी थी। बाबूलालजी की माँ की एक पुत्री थी जिसका विवाह पड़ोस के वर्दवान शहर के एक संपन्न परिवार में हो चुका था।

चूँकि बाबूलालजी ही गल्ले की आढ़त का मुख्य व्यापार सँभालते थे इसलिए नगर में उनकी ही पहचान मालिक के रूप में होती थी। यों तो बाबूलालजी बहुत व्यापार-कुशल थे परंतु वे थोड़े मनचले स्वभाव के और नाटक आदि के भी शौकीन थे। वे कलकत्ते की एक नाटक-मंडली की मलका नाम की नायिका के चक्कर में पड़ गये और हफ्तों घर से गायब होकर मलका के साथ कलकत्ते में समय बिताने लगे। पैसा पानी की तरह बहने लगा। इससे दुहरी हानि हुई। एक तो आढ़त का व्यापार देखरेख के बिना चौपट होने लगा, दूसरे घर की संचित पूंजी भी धीरे-धीरे साफ होने लगी। देखते-देखते स्थिति यहाँ तक बिगड़ी की पूँजी के अभाव में और साज-सँभाल न रहने से आढ़त का काम पूर्णतः बंद

कर देना पड़ा। बाबूलालजी पहले तो 10-5 दिन गायब रहते थे, अब वे महीनों रानीगंज लौटकर नहीं आते थे। मेरी बहन अपने एक पुत्र और तीन पुत्रियों को पालने-पोसने में रानीगंज में अपनी सास के पास समय बिताने लगी। अंत में एक बार जब बाबूलालजी घर आये तो समझा-बुझाकर उनसे रहने के विशाल भवन को उनकी माँ के नाम तथा उसके बगल का भवन मेरी बहन के नाम लिखा लिया गया। दुबराजपुर की धान की मिल तो पहले से ही उनकी माँ के नाम थी जिसका पूर्ण नियंत्रण बाबूभाई नामक मुनीम के जिम्मे था। उसकी आय वह बाबूलालजी की माँ के अतिरिक्त किसी अन्य को छूने भी नहीं देता था। वह विधुर था और उसको कोई संतान भी नहीं थी। उसके लिए उसका घरबार सभी वह मिल थी जहाँ उसने एक अनाथ मुस्लिम बच्चे को पुत्र की तरह पाल-पोसकर बड़ा किया था जो उसका एक मात्र उसका परिजन था।

बाबूलालजी रिहायशी मकान की अचल संपत्ति अपनी माता के नाम तथा एक मकान मेरी बहन के नाम लिखकर पूर्ण स्वतंत्र हो चुके थे। व्यापार बंद हो ही चुका था, इसलिए वे अब पूर्ण रूप से कलकता में रहने लगे। जब इस प्रकार कई महीने बीत गये तो उनकी माता को चिंता हुई। कलकत्ते में खोज करवाने पर पता चला कि वे मलका के साथ कश्मीर घूमने गये हैं। कुछ दिनों के बाद बाबूलालजी की माता के कहने से मैंने उनका पता लगाने का बीड़ा उठाया। कलकत्ते में गया-निवासी रामचंद्र 'आँसू' नामक मेरा एक मित्र रहता था जो फिल्मों में पटकथा और गीत आदि लिखता था। मैंने उससे संपर्क किया। उसने मुझे बताया कि मलका नाटक-मंडली से निकलकर अब फिल्मों में हिरोइन का काम कर रही है। रामचंद्र 'आँसू' के साथ मैंने मलका से मिलने का निश्चय किया ताकि पूरी बात की तह में पहुँच सकूँ। परंतु यह काम मेरे अपरिचित रहने से ही संभव था। मलका को बाबूलालजी से मेरे संबंध का पता नहीं लगने देना था। रामचंद्र 'आँसू' तो उससे परिचित थे ही। हम दोनों फिल्म कंपनी के स्टूडियों में गये जिसके पास ही मलका भी एक बँगले में रहती थी। मलका से मिलने तो रात के 7-8 बजे जाना था परंतु हम दोनों दिन में ही स्टूडियों में पहुँच गये थे क्योंकि रामचंद्र 'आँसू' को तो, काम हो या न हो, नित्य वहाँ चक्कर लगाना ही होता था। स्टूडियों का दृश्य जो मैंने वहाँ देखा, उसका चित्रण यहाँ संक्षेप में कर रहा हूँ ताकि फिल्म की रोमांसभरी चकाचौंध की रोशनी पर पतंगों की तरह आकर्षित होनेवाले उसकी असलियत का कुछ जायजा ले सकें। वहाँ मैंने चायघरों में कितने ही होनहार और कुछ पढ़े-लिखे भी, छोटे-बड़े घरों के नवयुवकों को चाय की चुस्की लेते हुए व्यर्थ की बकवास में समय बिताते देखा।

वे सभी फिल्म लाइन में हीरो बनने की और नाम तथा पैसे कमाने की लालसा से आये थे परंतु अंत में उनकी स्थिति यह हो गयी थी कि चरस और अफीम के नशेबाजों के समान वे दिनभर चाय की दो चार प्यालियाँ पीकर और डाइरेक्टरों और प्रोडयूसरों की कृपा पर फिल्म में एक्स्ट्रा (फिल्म की भीड़-भाड़ आदि के तथा अन्य कामों में सहयोग देनेवाले) आदि का काम करके दो-चार रुपये प्राप्त करने की धुन में बैठे रहते थे। वे संसार के नियमित अर्थोपार्जन के कामों के सर्वथा अयोग्य हो चुके थे। उनकी चर्चा के विषय भी फिल्मों के नायक-नायिकाओं के जीवन से ही संबंधित थे। उस वातावरण में 3-4 घंटों में ही, उनकी चाय आदि में 5-7 रुपये गँवाकर मैं उनकी दयनीय स्थिति से अवगत हो गया था। अस्तु, इधर-उधर समय काटकर रात के 7-8 बजे मलका के निवास पर मैं और रामचंद्र 'आँसू' पहुँच गये। तब तक मलका भी शूटिंग से घर लौट आयी थी। सूचना मिलते ही उसने हमें कमरे में बुलाया और हमारे लिए नौकर को चाय लाने का आदेश दिया। उसके साथ फिल्म-संबंधी इधर-उधर की चर्चा होने लगी क्योंकि सीधे-सीधे तो बाबूलालजी के संबंध में पूछा नहीं जा सकता था। अचानक मलका ने मेरे बारे में पूछा। रामचंद्र 'आँसू' ने बताया कि ये मेरे मित्र गया से कलकत्ता घूमने आये थे। इन्हें मैं स्टूडियों दिखाने ले आया था। गया का नाम सुनते ही मलका ने गौर से मेरी ओर देखा। वह यों ही स्टेज पर और फिल्मों में हिरोइन का काम नहीं करती थी। उसने नाम पूछने के बजाय गया में मैं किस महल्लें में रहता हूँ यह पूछ लिया। मैं नाम के विषय में तो चौकन्ना था कि स्कूल के रजिस्टर में अंकित अपना नाम दामोदर दास बता दूँगा परंतु महल्ले के विषय में तो मैंने सोचा भी नहीं था। मेरे मुँह से 'चौक' का नाम सुनते ही मलका 'आँसू' की तरफ मुड़कर बोली 'अरे, ये तो मेरे भाई हैं। बाबूलालजी के साले।' मैं चुप रहने के सिवा क्या बोलता! मेरे सुनहले बालों और भूरी आँखों के तथा मेरे रूप-रंग के विषय में मेरे बहनोई ने उसे अवश्य जानकारी दे दी होगी। बाबूलालजी के विषय में तो पता चला कि वे दो-तीन दिन से नहीं आये हैं परंतु मेरे स्वागत-सत्कार में मलका ने कोई कोर-कसर नहीं रक्खी।

इस प्रेम के नाटक का पटाक्षेप प्रायः दो वर्षों बाद जिस रूप में हुआ वह भी वैसा ही था जैसा हम लोग कहानी-उपन्यासों में पढ़ते हैं। एक दिन बाबूलालजी की माता एक नौकर के साथ रानीगंज से गया आ पहुँची। उसने मुझे बताया कि कलकत्ता में न मलका है न बाबूलालजी। वे दोनों कई महीनों से वहाँ से लापता हैं और सुना है मलका उन्हें अपने गाँव ले गयी है। यह भी

सुना है कि मलका अस्वस्थ है। मैंने अपने एक होशियार मोटर ड्राइवर ठाकुर तिवारी को साथ ले लिया और बाबूलालजी की माता के साथ गया से डिहरी और वहाँ से ट्रेन बदल कर उस शहर में गया जहाँ से मलका का गाँव दो-तीन मील की दूरी पर था। यह सारा पता बाबूलालजी की माता कलकत्ता स्टूडियों में जाकर ले आयी थी। हम लोगों के साथ बाबूलालजी की माता का नौकर भी था। हम लोगों ने बाबूलालजी की माता को तो स्टेशन के वेटिंग रूम में छोड़ दिया और तीनों व्यक्ति एक टैक्सी करके उस गाँव में गये। स्टेशन पर ही हमें पता चला कि उस गाँव की अधिकांश आबादी नर्तकियों और वेश्याओं की है। हम लोगों की यह योजना भी थी कि यदि बाबूलालजी से भेंट हो जाय तो हम किसी भी प्रकार समझा-बुझाकर और यदि आवश्यक हुआ तो पुलिस की सहायता लेकर एक बार उन्हें घर लौटा ही लायेंगे। रानीगंज में उनका पुत्र, तीन पुत्रियां और पत्नी थी जो उन्हें पुनः ममता की डोर में बाँधकर रोक ले सकती थी। हम जब पता लगाते हुए मलका के मकान में पहुँचे तो वह एक पलंग पर लेटी थी और हमारे लिए उठकर बैठ गयी थी। चूँकि उससे मैं पहले मिल चुका था इस लिए उसने बड़े प्रेम से मेरा स्वागत किया। मेरा ड्राइवर और रानीगंज का नौकर बाहर ही छिपे हुए मकान के बाहर घूमते रहे। मलका ने हमें बताया कि बाबूलालजी वहीं हैं और कहीं बाहर गये हैं। मैं प्रतीक्षा में बैठा-बैठा थोड़ी देर उससे बातें करता रहा। मलका का जो आकर्षक रूप मैंने कलकत्ता में देखा था उसका लेश भी अब शेष नहीं था। पूरा चेहरा सूखा हुआ रक्त-विहीन लगता था। रोग ने उसका सारा लावण्य छीन लिया था।

थोड़ी देर बाद बाबूलालजी ने कमरे में प्रवेश किया। मुझे देखते ही वे चौंक पड़े। मलका के पास से उठकर उनको लिये हुए, मैं कमरे के बाहर बरामदे में चला आया। बाबूलालजी ने मुझसे कहा, 'यह मेरी प्रेमिका है जिसका, रूप और यौवन के दिनों में मैंने बरसों उपभोग किया है। इसने भी, फिल्म की प्रसिद्ध हिरोइन होते हुए भी अपने एक मात्र प्रेमी के रूप में बरसों मेरा साथ निभाया है। इसे इस अवस्था में छोड़कर मैं किसी हालत में यहाँ से नहीं जा सकता। अब इसकी दवा-दारू और साज-सँभाल सब मेरे जिम्मे ही है। यह चंगी हो जाय या नहीं रहे तभी मैं घर लौट पाऊँगा। बाबूलालजी को लौटाकर अपनी बहन के सुख-सुहाग की रक्षा करना मेरा कर्तव्य था परंतु उनकी बातों में जो मानवीय पक्ष था उसकी अवहेलना मैं कैसे कर सकता था! मैं निरुत्तर हो गया। मैंने बाबूलालजी की माता को भी समझा-बुझाकर रानीगंज वापस भेज दिया और गया चला आया।

इस घटना के 3-4 महीने बाद मलका इस संसार से विदा हो गयी और बाबूलालजी रानीगंज लौट आये। उनका आढ़त का व्यापार तो समाप्त हो ही चुका था परंतु धान की मिल, जो उनकी माँ के नाम से थी, उससे यथेष्ट आय उसके गुजराती मैनेजर बाबूभाई के प्रयत्न से आ जाती थी। उस आय से बाबूलालजी की तीनों पुत्रियों का विवाह धूमधाम से अच्छे-अच्छे घरों में हो गया यद्यपि बाबूलालजी एक प्रकार से शेष जीवन निष्क्रियता में ही बिताते रहे।

बाबूलालजी की तीनों पुत्रियाँ का विवाह हो चुका था। मिल यथावत् चल रही थी कि एकाएक एक दिन समाचार आया कि रात में मिल के कर्ता-धर्ता बाबूभाई की किसीने उन्हींकी धोती से गला घोटकर हत्या कर दी है। उनके पास उसी साँझ को किसी व्यापारी के 26 हजार रुपये आये थे जो उन्होंने तिजोरी में रखे थे। तिजोरी की चाबी सिरहाने रखकर ही वे सदा की तरह सोये थे। व्यापार चला गया तो क्या, बाबूलालजी हुशियारी और सर्तकता में तो किसीसे कम थे ही नही। वे तुरत दुबराजपुर जा पहुँचे और एस.पी. से मिलकर कलकत्ता से पुलिस के अपराध पकड़नेवाले कुत्तों को बुलाने का अनुरोध किया। एस. पी. भी इस मामले में पूरी तरह सतर्क हो गया। तिजोरी की चाबी भी बाबूभाई के सिरहाने से रुपयों के साथ ही गायब थी। वह समझ गया कि यह किसी निजी व्यक्ति का ही काम है जिसे सारी जानकारी हो। बाबूभाई के पास, उनकी कोठी में, जो धान-मिल के अंदर ही थी, उनके पोष्यपुत्र उस मुस्लिम लड़के के सिवा, जिसका उन्होंने अनाथ समझ कर बचपन से पालन-पोषण किया था और जो अब 18-19 वर्ष का नवयुवक था, कोई अन्य नहीं रहता था। एक उसीको चाबी के रखने के स्थान की जानकारी थी। वह उस कोठी में ही एक अलग कमरे में रहता था और मिल के इधर-उधर के काम भी देखता था। सब से दयनीय दशा उसीकी थी क्योंकि उसके माता-पिता, परिवार, जो कुछ था, सब बाबूभाई ही थे जिन्होंने उसे पिता का प्रेम दिया था। वह फूट-फूटकर रो रहा था। दोपहर को करीब तीन बजे कलकत्ता से पुलिस का कुत्ता आ गया। उस कुत्ते को बाबूभाई के गले में फाँसी की रस्सी के उपयोग में लायी गयी उनकी धोती सुँघाई गयी और मिल के नौकर, बाग के माली आदि को एक पंक्ति में खड़ा कर दिया गया क्योंकि पुलिस को पहले घर के आदमियों से अपने संदेह को दूर करना था। कुत्ते ने धोती सूँघने के बाद बाबूभाई के पोष्यपुत्र की पतलून पकड़ ली। वह जितना छुड़ाने का प्रयत्न करता उतना ही अधिक कुत्ता बीच-बीच में भौककर

उस पर झपटता। पुलिस ने उसे हिरासत में ले लिया और दो-तीन-घंटों के बाद ही उसने अपराध ही नहीं स्वीकार कर लिया, वे 26 हजार रुपये भी अहाते के एक पेड़ के नीचे की जमीन खोदकर बरामद करा दिये।

उसने बताया कि शाम को बाबूभाई को कमरे की तिजोरी में रुपये रखते देखकर उसके मन में लालच आ गया था। वह जानता था कि वे तिजोरी की चाबी सिरहाने रखकर सोते है। उनके कमरे की चटकनी बाहर से किसी युक्ति से खोलकर तकिये के नीचे से तिजोरी की चाबी निकालने में वह सफल भी हो गया था परंतु तिजोरी खोलते समय उसकी आवाज सुनकर बाबूभाई जाग गये और उसका नाम लेकर पूछा, 'यह क्या कर रहा है,' इतना सुनते ही वह बाबूभाई पर झपटा और उनकी धोती खींच कर उसने उसीसे उनका गला घोंट दिया। शुरू में उसका मारने का कोई विचार नहीं था परंतु बाद में भय और आतंक की परिस्थितियों से वाध्य होकर वह ऐसा कुकृत्य कर बैठा था।